2. लोकनाट्य की विशेषताओं को बताते हुए 'सांग' का महत्त्व रेखांकित कीजिए । (15)

अथवा

'ख्याल' का स्वरूप स्पष्ट करते हुए सांग से समानता पर विचार कीजिए ।

3. 'बिदेसिया' में व्यक्त आजीविका की समस्या पर विचार कीजिए । (10)

अथवा

'बिदेसिया' के नाट्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए।

4. 'नल-दमयन्ती' स्वांग में परिलक्षित लोक-तत्त्व पर विचार कीजिए । (10)

अथवा

'नल-दमयन्ती' में पात्रों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

5. माच की परंपरा पर विचार करते हुए 'राजा भरथरी' का महत्त्व बताइए (10)

अथवा

'राजा भरथरी' की मूल संवेदना पर अपने विचार कीजिए।

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper :. 803 **J**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya (लोक नाट्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS-DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(1) रास्ता कवन बिदेसी के घर के ?

प्यारी बिदेस देस पिया भगलन, जी हमार लीही खबर के ?

करब टहल महल के निसि - दिन देखब नजर भर भर ।

कइसे प्राण रही प्रीतम बिनु छोड़ि दिहलन बाँह धर के ।

लुगरी पहिरब, सतुआ खाइब निजे मजुरी कर के।

कहट 'भिखारी' सारी धन लुटलस डाकू नतीजा कर के ।

अथवा

हमरा के सासत कइकें, परदेशवा गइले बेमान ।

कवनो त चोटही से प्रीतिया लगवले होइहे, अतने के बड़हिन गुमान।।

अपने पान खाय मुस्काट चलत होइहें, नैना से मारत होइहें शान।

हमरा हे हो दइब अब दुःख नया सहात बाटे, अधजल में कइ गइले प्राण ।।

सांवरी सुरत बीनू रहल कठिन बाटे, हमरा पपिनियां के जान ।

कहैं 'भिखारी' राम तप कहाँ गइले बलमुआं, कुहकत निसि दिन प्राण ।।

(2) शिक्षा कल्प व्याकरण ज्योतिष निरूक्त छंद की जाण नहीं ।।

सुरति स्मृति महाभारत और समझै अठारा पुराण नहीं ।।

बिन सतगुर के उपनिषदों के ज्ञान की कोई पहचान नहीं ।।

पढे-लिखे बिन मात-पिता गुरु छोटे-बड़े की काण नहीं ।।

सतपथ गौ पथ विधि भाग बिन सब कर्तव्य निष्फल होग्या ।।

आदर करके पास बिठाले सब पुरवासी आगे

भोजन तक की सोधी कोन्यां आच्छे खेलण लागे

पट्टी बिन किस तैं करूं जिकर मैं, ऐसा चढ़गया सांस शिखर मैं ।

जिन नैं कालः सुणी थी तेरे फिकर मैं वै सारे रात्यूं जागे।

(3) जावो जी पवन पंथी घोड़ा ये झीन कसावो जी।।

गड़ का ऊपर वणी पायगा, वां तम हुकम सुनावो जी ।

खोगीर झीण जरी की चादर, ऊपर से बीछवावो जी ।

सब सामान सिकारी सांते, अब तम लइणे आयो जी ।

पाँच ज्वान हतीयार बंद, रंगरूठ के लइणे आवो जी ।

बेगी जावो बेगी आवो, अब मत देर लगावो जी

अथवा

साचो सत जंगल का जीव में, देख्यो ही म्हणे देख्यो हे

सत को साँचो पड़छो देख्यो, यो मन महारो बैक्यो हे

जैसे पार की पड़ती छत में, सत को थांबो टेंक्यों हे ।

सत को सांच देखी ने भरत मन, को हेड़ीने फेंक्यो हे

सत की संगत से मन जाग्यो, मोह को बदन छेक्यो हे।

गिद्ध पे सत्ती हुइ हे गीदरणी, आग में तन सब सेक्यो हे ।